आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2757 • उदयपुर, बुधवार 13 जुलाई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

सेवा सदेश लेकर रवाना हुआ नारायण रथ

परहित भावना की नींव पर ही सुखी समाज की रचना संभव है। यह बात बुधवार को नारायण सेवा संस्थान के संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी मानव ने भारत भर में सेवा और सद्भावना का संदेश लेकर रवाना हुई रथयात्रा को हरी झंडी दिखाते हुए कही।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि रथयात्रा भारत भ्रमण करते हुए सेवा और संस्कारों का संदेश देने के साथ उन दिव्यांगजनों का चयन भी करेगी, जिन्हें निःशुल्क सर्जरी अथवा कृत्रिम अंग (हाथ–पैर) की आवश्यकता है। इस रथयात्रा में संस्थान की विभिन्न शाखाओं को 30 साधकों का दल शामिल है।

औरंगाबाद (बिहार) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 5 जून 2022 को रेडक्रास सोसायटी, सदर अस्पताल, औरगांबाद में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् उदय कुमार जी गुप्ता, अध्यक्ष नगर परिषद औरंगाबाद रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 66, कृत्रिम अंग वितरण 46, कैलीपर अंग वितरण 26 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् उदय कुमार जी गुप्ता (अध्यक्ष, नगर परिषद औरंगाबाद), अध्यक्षता डॉ. चन्द्रशेखर प्रसाद जी (शिशु रोग विशेषज्ञ), विशिष्ट अतिथि डॉ. महावीर प्रसाद जी जैन (समाज सेवी), श्री गिरजाराम चन्द्रवंशी (उपाध्यक्ष, दिव्यांग संघ), श्री विनोद जी (अध्यक्ष, दिव्यांग संघ) रहे। डॉ. पंकज जी (पी.एन. डो.), श्री नाथूसिंह जी, श्री करण जी मीणा (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), मुकेश जी त्रिपाठी (सह प्रभारी), बहादुर सिंह जी मीणा (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (फोटोग्राफर विडियो) ने भी सेवायें दी।

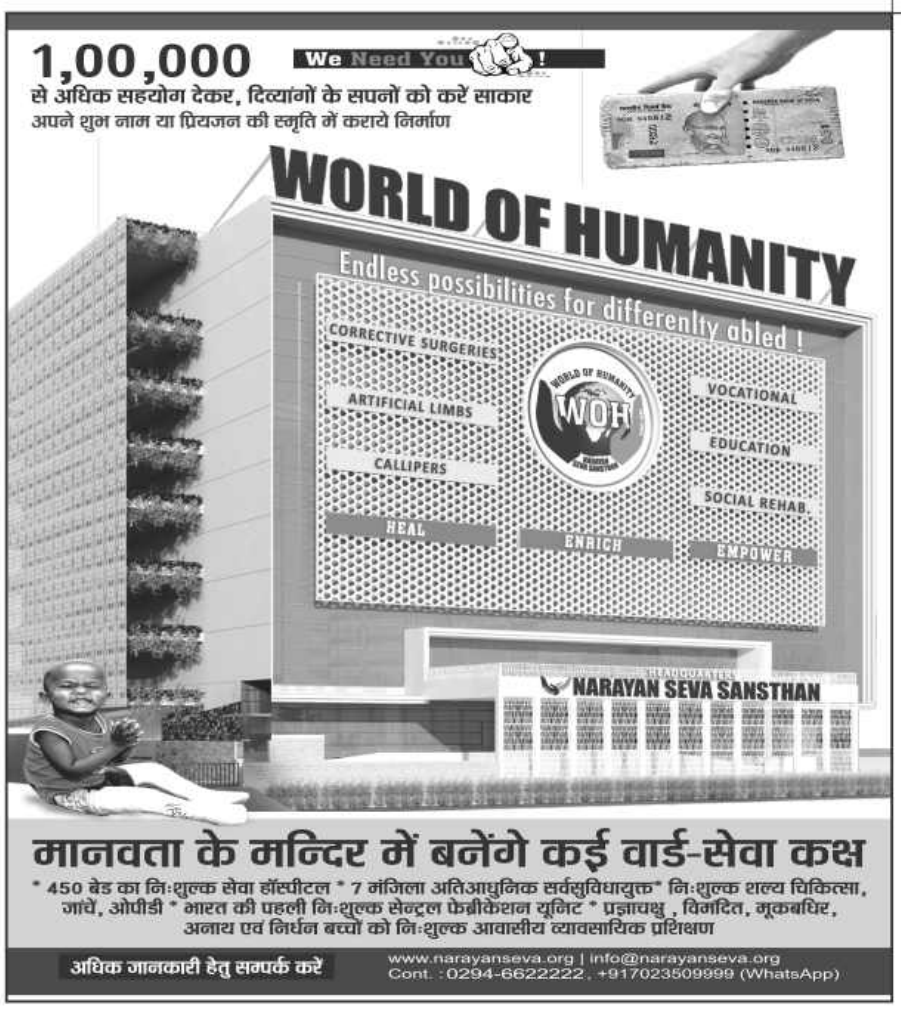

भारतीय सेना के सहयोग से नारायण सेवा का शिविर सम्पन्न

त्रिदिवसीय शिविर में नोर्थ कश्मीर के 410 दिव्यांगों को मिली चिकित्सा

नारायण सेवा संस्थान द्वारा गान्दरबल, श्रीनगर के दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में बसे दिव्यांगों के लिए बुसन बटालियन, कंगन और 34 असम राइफल्स के सौजन्य से कंगन आर्मी गुडविल सैकेण्डरी स्कूल में त्रिदिवसीय कृत्रिम अंग माप शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने विज्ञप्ति जारी कर बताया कि मेजर अनूप व केप्टन विपुल की मौजूदगी में तीनों दिन तक चले शिविर में संस्थान के डॉक्टर्स एवं प्रोस्थेटिक एण्ड ऑर्थोटिस्ट टीम ने 410 रोगियों को परामर्श दिया। 78 दिव्यांगों का केलीपर्स और कृत्रिम हाथ–पैर का माप लिया तथा 90 भाई–बहनों को शल्य चिकित्सा के लिए चिन्हित किया गया। शिविर में 70 फौजी–जवानों की टीम सहायता में लगी हुई थी। वही संस्थान की 15 सदस्य टीम ने अपनी सेवाएं दी। उन्होनें कहा कुछ सप्ताह बाद आर्मी के सहयोग से कृत्रिम अंग, केलीपर्स और सहायक उपकरण वितरण केम्प स्थानीय ग्रामीणों के लिए लगाया जाएगा।

हादसों से लाचार जिंदगी फिर चल पड़ी

पुसद – महाराष्ट्र के यवतमाल जिले के पुसद नगर में 24 अप्रैल को आयोजित को दिव्यांगज जांच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर में 162 दिव्यांगजन का पंजीयन हुआ। जिनमें से डॉ. वरूण जी श्रीमाल ने जांच कर निःशुल्क ऑपरेशन के लिए 37 का चयन किया, जबकि पीएण्डओ रिहांश जी मेहता व टेक्नीशियन किशन जी सुथार ने 31 दिव्यांगजन के लिए कृत्रिम अंग व 10 केलिपर बनाने का माप लिया। मुख्य अतिथि पुलिस उपअधीक्षक अनिल जी आड़े थे। अध्यक्षता नगर परिशद के मुख्य अधिकारी डॉ.किरण जी सुकतवाउ ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री श्रीराम महाराज, सुरेन्द्र सिंह जी राठौड़, राधे याम जी जांगिड़, दयाराम चव्हाण, हरिप्रसाद जी विश्वकर्मा व विनोद जी राठौड़ थे। संचालन हरिप्रसाद जी लढ्ढ़ा ने किया।

काचीगुड़ा – श्रीश्याम सेवा समिति के सौजन्य से काचीगुड़ा रेल्वे स्टेशन (हैदराबाद) के समीप श्री श्याम मन्दिर परिसर में 24 अप्रैल को 26 दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग व 14 को केलिपर प्रदान किए गए। शिविर प्रभारी लालसिंह जी भाटी के अनुसार मुख्य अतिथि योग गुरू श्री हर्षनंद जी महाराज थे। अध्यक्षता योग गुरू श्री कमलेश महाराज ने की। विशिष्ट अतिथि सर्वश्री रामदेव जी अग्रवाल, रिदीश जगीदार, श्रीमती सुमित्रा जी देवी व सत्य साक्षी संघ की रम्या जी ने की। मुकेश जी त्रिपाठी वहैदराबाद आश्रम प्रभारी महेन्द्र सिंह जी ने अतिथियों का स्वागत किया।

(हिमाचलप्रदेश) में हिमातों कर्श परिषद के सहयोग से 24 अप्रैल को आयोजित शिविर में 142 दिव्यांगजन का पंजीयन हुआ। जिनमें से डॉ. सिद्धार्थ जी लाम्बा ने जांच करके 18 का निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चयन किया, जबकि पीएण्डओ सुरेन्द जी सोनवाल व टेक्नीशियन नरेश जी वैश्णव ने 51 दिव्यांगजन के लिए कृत्रिम अंग व 20 के लिए कैलिपर बनाने का माप लिया। मुख्य अतिथि श्रीराधाकृष्ण मदिंर ट्रस्ट के चेयरमेन राष्ट्रीय संत बाबा बालजी थे। अध्यक्षता पूर्व मुख्यमंत्री प्रेमकुमार जी धूमल ने की। विशिष्ट अतिथि कृशिमंत्री वीरेन्द्र जी कंवर, वित्त आयोग के प्रदेश अध्यक्ष श्री सतपाल जी सती, जितेन्द्र जी कंवर व संस्था की हमीरपुर शाखा के संयोजक रसील सिंह मनकोटिया थे। शिविर प्रभारी अखिलेश जी अग्निहोत्री ने संचालन किया।

विशाखापट्टनम – गुरूदेवा चेरीटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से दो दिवसीय कृत्रिम अंग वितरण 27–28 अप्रैल को विशाखापट्टनम (आंध्रप्रदेश) के मंगलमपलम कोठावालसा मण्डल में सम्पन्न हुआ। जिसमें 84 दिव्यांगजन को कृत्रिम अंग व 17 को केलिपर का वितरण किया गया। मुख्य अतिथि गुरूदेवा ट्रस्ट के चेयरमेन श्री जगदीश जी बेबी थे। अध्यक्षता श्री रमैयाजी ने की। विशिष्ट अतिथि श्री सत्या जी थे। संचालन लालसिंह जी भाटी ने किया।

ऊना – राधाकृष्ण मंदिर ऊना

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

प्रभु की कृपा भयो सब काजू।
जनम हमार सफल भयो आजू।।

ऐसे पारब्रह्म परमात्मा की कृपा की कथा है। ये व्यवहार की कथा। ये मीठा बोलने की कथा। ये निन्दा नहीं सुनने की कथा, ये परिवार में एकता, समाज की उत्थान की कथा।

महिम जी– जब आपश्री ने व्यासपीठ पर समय की बात कही तो ये पंक्तियां सार्थक लेगी हमको गुरुदेव। हर व्यक्ति को पता होता कि हमारे पास दौलत कितनी, धन सम्पदा कितनी है, लेकिन हम कितनी भी दौलत खर्च कर दें। ये पता नहीं कर पाते कि हमारे पास वक्त कितना है, समय कितना है?

गुरुजी – हां जेन्टलमेन घड़ी तो लगाता था घड़ी देखता भी था पाँच–चार थे दोस्त साथ में बातें बहुत बनाता था।

लगी जो ठोकर गिरे बाबूजी
लगी हाथ में घड़ी रही
परदेशी तो हुआ रवाना,
प्यारी काया पड़ी रही।

देखो बन्धुओं, भाइयों और बहनों–

काल करे सो आज कर,
आज करे सो अब।
कबहु कि प्रलय होयगा,
फिर करेगा कब।।

अरे भगवान का स्मरण करने का अर्थ है भगवान की सेवा करना। इन दिव्यांगों को खड़ा करवाना । रसायन बनाओगे खरल पर किसकी रसायन बनाओगे। हमारा शरीर स्वास्थ रहे

काम, वात, कप, लोप अपारा,
क्रोध–पित्त, नीत छाती जारा।
मोह शकल ब्याधिन के मूला।
ऐहि–तेहि उपजऊ बहू शूला।।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्धटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

कोरोना महामारी ने भारी संख्या में तबाही फैलाई है। इस दौरान अनेक लोग हमसे सदा–सदा के लिये बिछुड़ गये। बड़ी मात्रा में शारीरिक रूप से क्षति हुई है। वैज्ञानिकों, सरकारों, प्रशासनों, समाज सेवियों, सकारात्मक विचारकों तथा अंनत लोगों की शुभकामनाओं के प्रभाव से वातावरण बदलने लगा है। तन और धन की क्षति भी खूब हुई है। पर इसे पुनः अर्जित करना कठिन नहीं है। इस कालखण्ड में सर्वाधिक क्षति मन की हुई है। मन में कमजोरी के कारण भय,स्वार्थ व केवल स्वयं की चिंता का भाव ज्यादा प्रभावी हो गया है। मानव सभ्यता व भारतीय संस्कृति के पूर्व प्रमाण बताते है कि हमारी जड़ें परहित की भूमि में हैं। इसलिये परार्थ के भाव को भी पुनः सिंचित करना एक अनिवार्य कर्म है। हम सबकों तन धन के साथ मानव मन को भी सुदृढ़ करता है। हमारी सामाजिक, संरचना, हमारा धार्मिक तानाबाना, हमारी ऊँची सोच इन सबके लिये उर्वरक है। इनका उपयोग कुछेक को नहीं, हरेक को करना है। देखेंगे कि दृश्य बदलते देर नहीं लगेगी।

कुछ काव्यमय

मेरी अतीत
मेरी अंगुली थामकर
मुझे सुखद भविष्य तक
अवश्य ले जायेगा।
देखना जल्दी ही
मानवता पुलकित होगी,
एक दूसरे पर भरोसा,
भाईचारा,फिर
पहले जैसा हो जायेगा।

अपनों से अपनी बात

सेवा बनायें दिनचर्या का अंग

सुबह जल्दी, बहुत जल्दी उठना, दुकान पर जाना, भट्टी चेतन करना, आलू उबालना, मसाले तैयार करना, दूध फेंटना और भी कई काम। उधर दुकान में झाड़ू लगाना, पानी भरना आदि। और यह कार्यक्रम रात में, देर रात तक कड़ाहियों के मांजनें और भट्टी ठंडी करने तक चलता रहता है। यह दिनचर्या, बल्कि कहना चाहिए जीवनचर्या है एक हलवाई की जो रात–दिन अपने परिवार के भरण–पोषण के लिए धनोपार्जन के काम में जुटा रहता है। यदि यही व्यक्ति किसी दिन इस दिनचर्या से हट के कोई अन्य कार्य करे जिसमें धनोपार्जन की गुंजाईश न हो, उदाहरणार्थ– निःशुल्क सेवा आदि, तब उसका मस्तिष्क तेजी से दौड़ेगा– "यह कार्य करने में मुझे क्या लाभ होगा, कहाँ मेरे नाम का उल्लेख होगा– अथवा इतने घंटों की कार्य–हानि के अलावा कुछ भी हाथ न लगेगा।" उस दिन घर लौटने पर उसकी पत्नी भी कहेगी –"आज तो आपने काफी काम किया है, थक गए होंगे।" सामान्य कार्यक्रम के अंतर्गत सुबह पांच बजे से रात ग्यारह बजे तक काम करने के उपरांत भी घर पहुंचने पर ऐसी टिप्पणी सुनने को नहीं मिलती। विचार किया जाय तो इसके पीछे दो कारण अनुभव होते हैं –धनोपार्जन और सामान्य दिनचर्या। हलवाई ही क्यों, न्यूनाधिक रूप में प्रत्येक व्यक्ति का –संभवतः हमारा और आपका भी दृष्टिकोण इससे बहुत अधिक भिन्न नहीं है। सामान्य व्यक्ति प्रत्येक कार्य को धन की तुला पर तौलता है। सम्पूर्ण दिनचर्या ही धन पर आधारित हो गई है। लीक से हट कर कोई कार्य थकावट का कारण बन जाता है। वस्तुतः हमारी सोच ही ऐसी हो गई है। सेवा कार्य को हमने अपनी दिनचर्या में गिना ही नहीं। यही कारण है कि यह कार्य हमें "अतिरिक्त कार्य" लगता है, इसमें थकान होती है, संभवतः नाम न होने का दुःख भी होता है। आइये, हम अपने सोच को बदलने का प्रयत्न करें। सेवा कार्य को भी दिनचर्या के अंग के रूप मानें ताकि इसके लिए अलग से प्रयास न करना पड़े, अलग से सोचने की आवश्यकता न पड़े। जीवन के अन्य कार्यों के साथ–साथ सेवा रूपी प्रभु कार्य भी निर्विघ्न चलता रहे। **कैलाश 'मानव'**

सच्चा राजा

बंगाल में गुष्करा एक छोटा–सा स्टेशन है। एक दिन रेलगाड़ी आकर स्टेशन पर खड़ी हुई। उतरने वाले झटपट उतरने लगे और चढ़ने वाले दौड़–दौड़कर गाड़ी में चढ़ने लगे। एक बुढ़िया भी गाड़ी से उतरी। उसने अपनी गठरी खिसका कर डिब्बे के दरवाजे पर तो कर ली थी; किन्तु बहुत चेष्टा करके भी उतार नहीं पायी थी। कई लोग गठरी को लाँघते हुए डिब्बे में चढ़े और डिब्बे से उतरे। बुढ़िया ने कई लोगों से बड़ी दीनता से प्रार्थना की कि उसकी गठरी उसके सिर पर उठाकर रख दें; किन्तु किसी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। लोग ऐसे चले जाते थे, मानो बहरे हों। गाड़ी छूटने का समय हो गया। बेचारी बुढ़िया इधर–उधर बड़ी व्याकुलता से देखने लगी। उसकी आँखों से टप–टप आँसू गिरने लगे।

एकाएक प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठे एक सज्जन की दृष्टि बुढ़िया पर पड़ी। गाड़ी छूटने की घंटी बज चुकी थी; किन्तु उन्होंने इसकी परवाह नहीं की। अपने डिब्बे से वे शीघ्रता से उतरे और बुढ़िया की गठरी उठाकर उन्होंने उसके सिर पर रख दी। वहाँ से बड़ी शीघ्रता से अपने डिब्बे में जाकर जैसे ही वे बैठे, गाड़ी चल पड़ी। बुढ़िया सिर पर गठरी लिये उन्हें आशीर्वाद दे रही थी – 'बेटा ! भगवान् तेरा भला करे।'

तुम जानते हो कि बुढ़िया की गठरी उठा देने वाले सज्जन कौन थे? वे थे कासिम बाजार के राजा मणीन्द्रचन्द्र नन्दी, जो उस गाड़ी से कोलकाता जा रहे थे। सचमुच वे राजा थे, क्योंकि सच्चा राजा वह नहीं है जो धनी है या बड़ी सेना रखता है। सच्चा राजा वह है, जिसका हृदय उदार है, जो दीन–दुःखियों और दुर्बलों की सहायता कर सकता है ? ऐसे सच्चे राजा बनने का तुम में से सबको अधिकार है। तुम्हें इसके लिये प्रयत्न करना चाहिये।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

प्रतापगढ़ की सफलता के बाद बाहर भी ऑपरेशन करने का सिलसिला प्रारम्भ हो गया। नाथद्वारा मण्डल के सहयोग से एक ऑपरेशन शिविर किया। इन्हीं दिनों मुम्बई के एक सेठ कैलाश से मिले। उनकी इच्छा थी कि सिलवासा में ऐसा शिविर लगाया जाये। कैलाश ने हां भर ली। सिलवासा उदयपुर से बहुत दूर था, सारा सामान और व्यवस्थाएं यहां ले जाकर स्थापित करना अत्यन्त दुष्कर था मगर कैलाश को संघर्षो में ही काम करने में मजा आता था। सेठ ने 100 रोगियों के ऑपरेशन की बात की थी मगर 400–500 लोग आ गये। इतने लोगों के लिये उपकरण, दवाएं अन्य साधन–सामान जुटाना संभव नहीं था। कैलाश ने सेठ से मदद मांगी तो उसने साफ इन्कार कर दिया, बोला–इतने तमाम लोगों का ऑपरेशन करो उसके बाद ही यह पैसे देगा। कैलाश के पास पैसे भी नहीं थे, उसने 100 ऑपरेशन तक की व्यवस्था की थी मगर सेठ एक पैसा तक देने को तैयार नहीं था। मरता क्या न करता, मुम्बई गया, दवाएं, उपकरण व अन्य साधन उधार मांग कर लाया और जैसे तैसे सभी लोगों के ऑपरेशन किये। इस तरह की समस्याएं आये दिन पेश होने लगी। उत्तर प्रदेश के वृन्दावन में शिविर आयोजित करने हेतु वहां के कांच के मन्दिर की संस्था का अनुरोध आया तो वह सभी आवश्यक साधन–संसाधन ले वहां चला गया। वृन्दावन में उस संस्था ने न जाने क्या प्रचार किया कि 6 हजार पोलियो रोगी आ गये। कई तो शिविर की तिथि से 3 दिन पहले ही आकर जम गये। हालत यह हो गई कि जिधर नजर डालो, उधर रोगी ही रोगी नजर आते थे। पैसे कोई भी प्रायोजक एडवान्स में नहीं देता था, यह डर हमेशा सताता रहता था कि शिविर के बाद भी हाथ खड़े कर देंगे तो क्या होगा। रोज सुबह जल्दी शुरू कर दोपहर की डेढ़ बजे तक ऑपरेशन चलते रहते।

अंश - 154

शिव आराधना के पावन श्रावण मास में संस्थान से जुड़कर करें दीन दुःखी दिव्यांगजनों की सेवा....और पाये पुण्य

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

कथा आयोजक :
अनिल कुमार मित्तल, अरूण कुमार मित्तल एवं सपरिवार, आगरा

श्रीमद्भागवत कथा

दिनांक:
14 से 20 जुलाई, 2022
समय : सायं
4.00 से 7.00 बजे तक

संस्कार
चैनल पर सीधा प्रसारण

कथा व्यास
डॉ. संजय कृष्ण 'सलिल' जी महाराज

स्थान : श्री खाटूश्याम मन्दिर, जीवनी मंडी, आगरा (उ.प्र.)
स्थानीय सम्पर्क सुत्र :9837362741, 9837030304

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

काले नमक व अजवायन से पाएं पेटदर्द में आराम

- अदरक व लहसून बराबर मात्रा में पीसकर एक चम्मच पानी के साथ लें।
- एक ग्राम काला नमक और दो ग्राम अजवायन गर्म पानी के साथ लेने से पेटदर्द की समस्या में राहत मिलती है।
- सोंठ, हींग और कालीमिर्च का चूर्ण बराबर मात्रा में मिलाकर एक चम्मच गर्म पानी के साथ लेने से इस समस्या में तुरंत आराम मिलता है।

दाद, खाज, खुजली, फुंसियों, घमौरियों से ऐसे पाएं राहत

बारिश के दिनों में दाद–खाज, खुजली, फुंसी, घमौरियों आदि की समस्याएं होने लगती है। इनसे बचाव के लिए नीम के पानी से स्नान किया जा सकता है। सेब के सिरके को पानी में मिलाकर लगाने से फुंसियों में आराम मिलता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

नारायण सेवा ने स्कूल में दी पानी की टंकी

पंचायत समिति गिर्वा की पंचायत देवली के खेजड़ा गांव में शुक्रवार को नारायण सेवा संस्थान ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय को पानी की टंकी भेंट की। इस अवसर पर मौजूद ग्रामीणों ने संस्थान का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इससे अध्ययनरत बच्चों को पेयजल के लिए बाहर नहीं जाना पड़ेगा।

निर्जला एकादशी के क्रम में संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने बताया कि निदेशक वंदना जी अग्रवाल एवं दिव्यांग भाई बंधुओं की टीम ने माली कॉलोनी चौराहे पर शरबत व आम का वितरण किया। जबकि बड़ी गांव के जरूरतमंदों व ग्रामीणों को वस्त्र बिस्कीट वितरण, पक्षियों के परिण्डे एवं भोजन बांटा गया। इस दौरान संस्थान के दिलीप सिंह जी, फतेहलाल जी, मुन्ना जी आदि उपस्थित रहे।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

श्री गणेश भगवान की कृपा की अनूभूति करता हूँ। प्रेम, स्नेह ठाकुर जी ने दिया है। प्रेम, स्नेह के बल का सदुपयोग करते हुए चाहता हूँ कि स्वाधीनता कर लूं। तो स्वाधीन भावों के साथ में आज 14 फरवरी 2020 को प्रातःकाल जब परमानन्द आश्रम के कक्ष में रिकार्डिंग करवा रहा हूँ। 9 फरवरी को 47 जोड़ों को दिव्यांग विवाह करवाने में सफल हुए। जोड़ों की हाइड्रोलिक स्टेज पर वरमाला की रस्म हुई। विवाह गीत के साथ अन्य रस्म पूरी हुई। मन प्रफुल्लित और हर्षित हो रहा हैं। उस समय मन की स्मृतियों को संजोते हुए 34 वां विवाह का समारोह है जिसमें 47 जोड़े हैं। पिछली बार छः महीने पहले 51 जोड़े हुए थे। 1998 में पाँच जोड़ों का विवाह हुआ। भारतीय वाड़मय में विवाह को भी एक प्रमुख संस्कार माना गया है। यह संस्कार हर संसारी का हो पर ऐसा संभव कहां, महाराज। फिर दिव्यांग व निर्धन के लिये तो यह पहाड़ जैसा दुर्गम है। किंतु आप सभी के सहयोग दानशील महानुभावों के सम्बल व समाजसेवियों की प्रेरणा से आपकी अपनी नारायण सेवा संस्थान इस दुष्कर किंतु सेवा सम्मत कार्य को करने हेतु उद्यत हुई है। यह शक्ति बनी रहे। यह भी एक विशिष्ट सेवा है। जो परमात्मा कृपा करके करवा रहा है। सुखद स्मृतियाँ और मन की स्थितियाँ बहुत बढ़िया है। अभी बार–बार मन में संजोये हुए अणु–अणु में लाभ हो रहा है। पूरा ये देह–देवालय तरल ही तरल। कहीं ठोस नामो निशान नहीं। तरल और ठोस में भी स्पन्दन। जब अनित्य सब है तो राग करने के लिए कहानी कहाँ है? राग भी नित्य नहीं है, द्वेष भी अनित्य। कितना बदलाव आ गया? जब मैं पिण्ड़वाडा की पीड़ा 1976 का स्मरण करता हूँ 16 जुलाई का उस समय तो मोबाइल भी नहींथे– भैया। भंवर सिंह जी राव ने किसी को संदेश दिया। पोस्ट ऑफिस वालों को, आप कैलाश जी को किसी तरह से फोन कर दो। पोस्ट ऑफिस जाओ दौड़कर, वहाँ के पोस्ट ऑफिस से सिरोही पोस्ट ऑफिस में फोन करो। फोन की घंटी बजी भंवर सिंह जी राव साहब का घुटना सूज गया है, जलन है और पिण्ड़वाडा के पास में वहाँ डिस्पेंशरी में उनको लाया गया। जंगल में ऐक्सीडेन्ट तो दूर हुआ था 40 घायल तड़प रहे हैं। उस समय तुरन्त मैंने निर्णय लिया, उच्च अधिकारियों से अवकाश लिया। उन्होंने तुरन्त अवकाश दे दिया। अच्छी बात है और सम्बन्ध अच्छे होने चाहिए।

तुलसी इस संसार में,
भांति–भांति के लोग।
सबसे हिल मिल चालिये,
नदी नाव संजोग।।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 507 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023